डबिंग (पश्च ध्वन्यंकरण) की प्रक्रिया और अनुवाद

प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी

आज भूमंडलीकरण के युग में जन संचार और अनुवाद के क्षेत्र में डबिंग (dubbing) का महत्व बढ़ गया है। विदेशी भाषाओं में ही नहीं, भारत में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में भी इसकी भूमिका को बहुत उपयोगी माना जा रहा है। मीडिया और अनुवाद के संदर्भ में इन दोनों की प्रक्रिया और आवश्यकता को समझा जाने लगा है। वास्तव में टेलीविज़न में प्रसारित कार्यक्रमों में और फिल्मों में अधिकाधिक विविधता लाने का प्रयास रहता है, क्योंकि अधिकतर फिल्में और सीरियल दर्शक-केंद्रित होते हैं। कई बार निर्माता और प्रायोजक अलग प्रकार के कार्यक्रम और सीरियल प्रस्तुत करते हैं जो अन्य भाषाओं में बड़े लोकप्रिय या मनोरंजक माने जाते हैं। श्रोता और दर्शक विविधता तथा नवीनता को बहुत पसंद करते हैं। इसलिए अन्य भाषाओं के कार्यकर्मों, धारावाहिकों आदि को दूसरी भाषा में लाया जाता है। इस प्रक्रिया को डबिंग या पश्च ध्वन्यंकरण कहते हैं। श्रोता और दर्शक को ऐसे सीरियल, फीचर फिल्म, एनीमेशन और कार्टून दिखाए जाते हैं, जिनका संबंध पूरे विश्व से होता है, लेकिन दिखाई देते हैं अपनी मातृभाषा या स्थानीय भाषा में। ऐसे अनजाने, अनदेखे और अलग से लगने वाले लोगों और पात्रों को अपनी भाषा में बातचीत करते देखना रोमांचकारी और रोचक लगता है। यह रोमांच दिलाता है डबिंग।

डबिंग का अर्थ और स्वरूप

शब्दकोश में 'डब' का सामान्य अर्थ हैं - एक, किसी को नई उपाधि देना, उपनाम रखना, नया अथवा रोचक नाम देना; दो, किसी ज़ख्मी पक्षी की मरहम-पट्टी करना और तीन, इमारती लकड़ी अथवा चमड़े को काट कर या रगड़ कर मुलायम अथवा समतल बनाना। फिल्म उद्योग में डब का प्रयोग कई अर्थों में होता है, जिनमें रिकार्डिड सामग्री को नए-नए रिकार्डिड माध्यमों में अंतरित करना, फिल्म या टेप में ध्वनि जोड़ना, पहले से रिकार्ड किए गए विभिन्न गीतों या गानों के अंशों को मिला कर नए गीत की रचना करना अथवा पुराने गीतों या गानों के टुकड़ों को मिला कर नया गीत बनाना, नए ध्वनि-पथ (sound track) को अंतर्विष्ट करना अर्थात फिल्म में एक भाषा के ध्वनि-पथ को दूसरी भाषा में प्रतिस्थापित करना आदि प्रमुख हैं। इस क्रिया शब्द से डबिंग संज्ञा शब्द बना है। वास्तव में फिल्म-निर्माण, दूरदर्शन और वीडियों-निर्माण में डबिंग एक पुन: रिकार्डिंग की एक पश्च-निर्माण प्रक्रिया है, जिसमें मूल ध्वनि (संवाद, गीत आदि) के साथ अतिरिक्त अथवा पूरक रिकार्डिंग जोड़ी जाती है, जिससे एक परिष्कृत ध्वनि-पथ का निर्माण होता है।

फिल्मी जगत में डबिंग एक जाना-पहचाना शब्द हो गया है। फिल्म उद्योग में फिल्म के निर्माण के समय सभी अभिनेताओं को अपनी फिल्मों की डबिंग करनी पड़ती है। वास्तव में फिल्म की शूटिंग के दौरान कलाकार अपने जो संवाद बोलते हैं, उनके साथ-साथ कई अन्य अवांछित ध्वनियाँ या शोरगुल भी रिकार्ड हो जाते हैं। इन अवांछित व्यवधानों को ध्वनि-पथ (sound track) से हटाने के लिए डबिंग की जाती है। डबिंग थियेटर में कलाकार अपनी फिल्म को छोटे-छोटे टुकड़ों (जिन्हें shots कहते हैं) में देखता है और अपने होठों के उतार-चढ़ाव को पर्दे पर देख कर एक बार फिर संवाद को माइक्रोफोन से

बोलता है। दोबारा बोले गए संवाद को पहले रिकार्ड हुई कटी-फटी आवाज़ के स्थान पर भर लिया जाता है। यही डबिंग कहलाता है।

सामान्य अर्थ में डबिंग स्क्रीन पर दिखाई देने वाले अभिनेता की आवाज़ को दूसरे कलाकार की आवाज़ से देना है जो अन्य भाषाभाषी हो सकता है। कई बार तो नया ध्वन्यांकन प्रस्तुत करने के लिए भी डबिंग होता है जो वीडियो में पहले ही लक्षित श्रोता या दर्शक की भाषा में दिया होता है। इस प्रकार ध्वन्यालेखन (sound recording) में पहले से की गई श्रव्य सामग्री का एक माध्यम से दूसरे माध्यम में रूपांतरण करना या अनुकरण करना डबिंग है। यह रूपांतरण एक समान ढंग से या भिन्न प्रकार से होता है। डबिंग फिल्म-निर्माण या वीडियो-रचना में बाद में प्रयुक्त वह उत्पादन प्रक्रिया है, जिसमें अतिरिक्त अथवा पूरक रिकार्डिंग मूल उत्पादन ध्वनि के साथ मिल जाती है। इससे परिष्कृत ध्वनि-पथ का सृजन होता है।

डबिंग किसी फिल्म के पूर्ण संवाद के समेकित ध्वन्यांकन तथा विकल्पों के निर्माण की प्रक्रिया भी है जो टीवी कार्यक्रम, वीडियो कार्यक्रम आदि में भी हो सकता है। दूसरे शब्दों में, डबिंग एक ऐसी प्रक्रिया है, जिससे किसी वीडियो कार्यक्रम के मूल ध्वन्यांकन को बदला जा सकता है। निर्माण प्रक्रिया की बाद की जो परिवर्तित या मिश्रित ध्वन्यांकन-क्रिया होती है वह टी. वी. कार्यक्रम, वीडियो आदि में की जाती है। डबिंग का प्रयोग प्राय: विदेशी फिल्म या मूवी का स्थानीकरण करने के लिए होता है। नए स्वर-पथ (voice track) में स्वर-कलाकार या स्वर-अभिनेता की आवाज़ प्राय: दी जाती है; जैसे– टी. वी. चैनल पर 'वेकशीकेसल' और 'डोरेमान' नामक जापानी कार्यक्रमों में जो डबिंग हिंदी में हुई है, वह अच्छी है। इसी प्रकार सुप्रसिद्ध चैनल 'डिस्कवरी' पर टेलिकास्ट होने वाले सुपरहिट सीरियल 'Man versus Wild' के एंकर बीयर ग्रिल्स की आवाज़ की डबिंग हिंदी में हुई हैं। आज विदेशी बाज़ार में स्थानीय भाषा में फिल्मों, वीडियो या वीडियो गेम्स की डबिंग होती है। यह डबिंग मंचीय रूप से निर्मित फिल्मों, टी. वी. फिल्मों, टी वी धारावाहिकों, कार्टूनों और सजीव चित्रों (animation) में आम है। हिंदी में 'मोटू-पतलू' एनिमेटिड कार्टून धारावाहिक के पात्रों की आवाज़ का डबिंग है।

डबिंग और ए. डी. आर: कभी-कभी ए. डी. आर. और डबिंग के बीच भ्रम हो जाता है। ए. डी. आर. का विस्तृत रूप है आटोमेटेड डायलाग रिप्लेसमेंट (Automated Dialogue Replacement) अथवा एडीशनल डायलाग रिकार्डिंग (Additional Dialogue Recording)। इसमें मूल अभिनेता श्रव्य खंडों का रिकार्ड और समक्रमण (synchronising) करता है। ए. डी. आर. मूल अभिनेता द्वारा बोले गए संवाद के पुन: रिकार्डिंग की प्रक्रिया है, जो फिल्म-निर्माण की प्रक्रिया के पश्चात होती है। इससे श्रव्य की गुणवत्ता में या तो सुधार होता है या संवाद में परिवर्तन दिखाई देता है। ए. डी. आर. का प्रयोग उन मूल पंक्तियों को परिवर्तित करने के लिए भी होता है जो सेट पर रिकार्डिड होती हैं। यह कार्य संदर्भ स्पष्ट करने के लिए अथवा कथन-शैली या समय-अंतराल में संशोधन करने के लिए अथवा बलाघातपूर्ण वाचिक निष्पादन के प्रतिस्थापन के लिए होता है। यूनाइटेड किंगडम में इसे पश्च-समक्रमीकरण कहते हैं।

फिल्म उद्योग के बाहर डबिंग शब्द सामान्यत: स्क्रीन पर दिखाए गए अभिनेताओं की आवाज़ों को अन्य भाषा बोलने वाले विभिन्न अभिनेताओं की आवाज़ों के प्रतिस्थापन का अर्थ देता है। इसे फिल्म उद्योग में पुनर्स्वरीकरण (re-voicing) कहा जाता है।

डबिंग का ऐतिहासिक संदर्भ

डबिंग फिल्मों में कई वर्षों से चली आ रही है। डबिंग का पहला श्रेय सन् 1929 में रेडियो-कीथ -ओर्फ़ीयम, न्यूयार्क (RKO) के मेरिओन पी. हॉल्ट को जाता है, जिन्होंने अपनी अंग्रेज़ी फिल्म 'रियोरिटा' का डबिंग स्पेनिश में कराया था। इसके पश्चात डबिंग की तकनीक का विस्तार बहुत हो गया। बीसवीं शताब्दी के पाँचवें दशक में जब राज कपूर की हिंदी फिल्म 'आवारा' को रूस के दर्शकों ने डबिंग के माध्यम से रूसी भाषा में देखा तो वे राज कपूर के दीवाने हो गए थे।

प्रारंभिक काल में डबिंग की प्रक्रिया मुख्यत: संगीत में प्रयुक्त होती थी जब नायक-नायिकाओं की आवाज़ में सुरीलापन नहीं होता था। उनके गाने की आवाज़ संतोषजनक न होने के कारण सुरीली आवाज़ों को रिकार्ड किया जाता था और मूल आवाज़ के साथ बदल दिया जाता था। वास्तव में फिल्म के प्रारंभ में नायक-नायिका को अपना गीत गाना होता था। बाद में प्लेबैक पद्धति का विकास हुआ, जिसमें फिल्मों के नायक-नायिका अलग होते थे और उनपर फिल्माए गए गीतों के गायक अलग होते थे। कभी-कभी उसी नायक या नायिका से पुन: रिकार्डिंग कराई जाती है, ताकि ध्वनि-चिह्नों में सुधार किया जा सके और उसे प्रभावी बनाया जा सके।

विश्व भर में विभिन्न भाषाभाषी दर्शकों एवं श्रोताओं तक अपनी पहुँच बनाने के लिए डबिंग का काफी उपयोग होने लगा है। भारत में बॉलीवुड की फिल्म समूचे देश में तो प्रदर्शित होती ही है, बाहर विदेशों में भी प्रदर्शित होती है। हॉलीवुड की फिल्में भी एक ही समय में कई देशों में प्रदर्शित होती हैं। कुछ देशों में फिल्में स्थानीय भाषाओं के उपशीर्षक अथवा स्थानीय भाषाओं में डबिंग कर प्रदर्शित की जाती हैं। इस प्रक्रिया में आज श्रव्य-दृश्य सामग्री की स्क्रीनिंग में डबिंग फिल्म कलाकारों, निर्माताओं और निर्देशकों को उन देशों के वृहत्तर श्रोतावर्ग से जोड़ने में सहायता करता है, जिनके दर्शक मूल फिल्म के अभिनेताओं की भाषा न तो बोल पाते हैं और न ही जानते हैं।

डबिंग में अनेक समस्याएँ भी आती हैं। इनको दूर करने के लिए तकनीशनों ने एक नई तकनीक की खोज की है, जिसे वीडियो-पुनर्लेखन (Video Rewriting) कहते है। इसमें कंप्यूटर से होठों की गति को नए ध्वनि-पथ में सजीवीकरण के अनुरूप जोड़ा जाता है। इस प्रकार डबिंग की प्रक्रिया ने एक लंबा रास्ता तय किया है। अब यह विशेषज्ञता का क्षेत्र बन चुका है। भारत में ही लगभग एक सौ से अधिक ऐसे संगठन हैं, जो डबिंग में विशेषज्ञता प्राप्त कर चुके हैं।

डबिंग और वायस-ओवर में अंतर

वायस-ओवर (सह संवाद) डबिंग का एक रूप है, जिसके माध्यम से 'डिस्कवरी' और 'नेशनल ज्योग्राफिक' जैसे चैनलों की पहुँच भारत में दूर-दूर तक फैली हुई है। वास्तव में वायस-ओवर (Voice-Over) ध्वनि-पथ में दृश्यों के अंशों में भाषा के द्वारा अधिक विस्तार देने की प्रक्रिया है। यह स्क्रीन पर दृश्यों की व्याख्या करता है, जिसमें सामान्य तौर पर वर्णनकर्ता अपनी आवाज़ से स्क्रीन पर दृश्यों की

सूचना देता है। यह उल्लेखनीय है कि डबिंग की प्रक्रिया वायस-ओवर की प्रक्रिया से अधिक कठिन है। डबिंग के दौरान होठों की गति और शारीरिक भाषा में समरूपता या एकरूपता सुनिश्चित की जाती है तथा उनमें तालमेल तथा सामंजस्य बिठाने की आवश्यकता होती है। वायस-ओवर में वर्णनकर्ता की कोई सीमा निर्धारित नहीं होती। उसके लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि उसके द्वारा किया जा रहा वर्णन दृश्यों के साथ सामंजस्य बैठा रहा है या नहीं। अत: दृश्यों के साथ वर्णन का मिलान करना आवश्यक होता है।

डबिंग का मूल्य और महत्व वायस-ओवर से काफी अधिक है। डबिंग के लिए विभिन्न पात्रों या चरित्रों के संवाद रिकार्ड करने के लिए अनेक कलाकारों की ज़रूरत होती है, जबकि वायस-ओवर में दृश्यों की व्याख्या करने के लिए केवल एक व्यक्ति की आवश्यकता होती है। अत: डबिंग वायस-ओवर से अधिक जटिल कार्य है।

डबिंग में अनुवाद की भूमिका

डबिंग का अनुवाद के साथ भी निकट का संबंध है। इसे व्यापक संदर्भ में श्रव्य-दृश्य अनुवाद की विधा में रखा जा सकता है। ये अनुवाद के अंत:भाषिक और अंतरभाषिक दोनों आयामों को अपने भीतर समेटे हुए तो हैं ही, साथ ही अपनी प्रक्रिया में ध्वनि, चित्र, संगीत तथा अन्य सांकेतिक अथवा अमौखिक तत्वों को भी सन्निहित किए होते हैं। इस प्रकार डबिंग की प्रक्रिया में अनुवाद का विशेष संबंध है। जैसा कि हम पहले भी उल्लेख कर चुके हैं कि डबिंग में स्क्रीन पर दिखाई दे रहे अभिनेता की आवाज़ को दूसरे कलाकार की आवाज़ में बदला जा सकता है। वहाँ यह आवाज़ एकभाषी कलाकार की होती है तो अन्य भाषी कलाकार की भी आवाज़ हो सकती है। इस प्रकार अन्य भाषा में जो डबिंग होती है उसका संबंध अनुवाद से होना स्वाभाविक है। यहाँ डबिंग का अर्थ अनुवाद के माध्यम से अन्य भाषा में अंतरण करने से है। मूल भाषा में जब कोई फिल्म बनती है तो उनके संवादों, गीतों आदि को डबिंग करते हुए अन्य भाषा या भाषाओं में संयोजित किया जाता है। इस प्रकार डबिंग एक भाषा से दूसरी भाषा में किए गए अनुवाद को दर्शकों एवं श्रोताओं तक पहुँचाने का माध्यम है।

डबिंग-अनुवाद में यथासंभव यह प्रयास रहता है कि शब्दों, वाक्यांशों आदि अभिव्यक्तियों से भावों और विचारों का उद्घाटन लक्ष्य भाषा में हो जाए। वस्तुत: क्लोज़-शॉट (Close Shot) में संवादों को बनाए रखने के साथ-साथ लाँग-शॉट (Long shot) में भी थोड़ी-बहुत स्वतंत्रता ली जा सकती है। अनुवाद में भाषा की मुखरता, गति, रवानी, मुहावरा आदि पर भी ध्यान रखना पड़ता है, किंतु अभिनेता के मुख से निकली मूल भाषा की ध्वनियों से हुए होठों के समक्रमीकरण (lip synchronization) और फैलाव का भी सूक्ष्मता से बहुत ही अधिक ध्यान रखना पड़ता है। दूसरे शब्दों में अनुवाद को इस ढंग से शैलीबद्ध कर के उच्चरित किया जाता है कि डब करने वाले अभिनेता का उच्चारण पर्दे पर दिखाई देने वाले अभिनेता के होठों के संचालन से मेल खाए। इसके अतिरिक्त डबिंग-अनुवाद में संवादों के दौरान होठों के हिलने के साथ-साथ अभिनेताओं के चेहरे की भंगिमाओं और कंधे उचकाने या झटकाने जैसी शारीरिक चेष्टाओं का तालमेल भी लक्ष्य भाषा में

प्रस्तुत संवादों से मिलाना होता है। इसके साथ-साथ इसमें समय-निर्धारण अथवा समय-मापन (timing) भी दो स्तरों पर करना पड़ता है – एक, अक्षरों को बोलने का समय और दो, शब्दों या वाक्यों के बीच आने वाले विराम या श्वसन का समय। वास्तव में डबिंग के अनुवाद की सफलता इस बात पर निर्भर है कि दर्शक को यह बिलकुल पता न चले कि पर्दे में दिखाई देने वाले अभिनेता ने जो संवाद बोला है वह उसे मूल भाषा में सुन रहा है या किसी अन्य भाषा में। हर भाषा की अपनी प्रकृति, संरचना, सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति, देश-काल, लक्षणा-व्यंजना आदि होती हैं जो अनुवाद में, विशेषकर डबिंग में समस्या पैदा करती हैं। पात्रानुकूल भाषा को ध्यान में रखना तो है ही, साथ ही लक्ष्य भाषा के दर्शकों और श्रोताओं की क्षमता पर भी दृष्टि रखनी पड़ती है। यदि इनमें कोई गड़बड़ी हो जाती है तो दर्शक या श्रोता को परेशानी हो जाती है।

डबिंग से वीडियो विश्व-भर के बहुभाषी दर्शकों और श्रोताओं के पास पहुँचता है। जहाँ निर्माता अन्य भाषाभाषी वर्ग तक अपनी फिल्म पहुँचा कर लाभ कमाता है, वहाँ अन्य भाषी लोग उस फिल्म को अपनी भाषा में देख लेते हैं, जिसका निर्माण मूल भाषा में हुआ है। इसी डबिंग-अनुवाद से हालीवुड की अनेक फिल्मों ने भारतीय दर्शकों को प्रभावित किया है। विदेशी फिल्मों, विशेषकर अंग्रेज़ी से हिंदी में अनूदित फिल्मों को भारतींय दर्शक बड़ी रुचि से देखते हैं, जिनमें जुरासिक पार्क, टाइटैनिक, होम अलोन, डीप-इंपेक्ट, मैन-इन-ब्लैक, अनाकोंडा आदि उल्लेखनीय हैं। इसी प्रकार स्माल वंडर, आई ड्रीम आफ ए जिनी, तां एंड जेरी आदि अनेक विदेशी सीरियल भी टेलीविज़न पर दिखाए गए हैं और दिखाए जा रहे हैं, जिनका अनुवाद डबिंग प्रक्रिया के दौरान हुआ है। कार्टून और एनीमेशन फिल्मों के लिए तो डबिंग सामान्य बात हो गई है। रूडयार्ड किपलिंग की पुस्तक 'जंगल बुक' की एनिमेटेड शृंखला के मोगली को डबिंग कलाकारों ने बच्चों में लोकप्रिय बना दिया है। इनके अनुवाद में न तो शाब्दिक अनुवाद हुआ है, न ही मूल या स्रोत भाषा के शब्दों का प्रतिस्थापन और न ही वाक्य-विन्यास का अनुगमन। साथ ही इनमें सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का भी ध्यान रखा गया है। इसी प्रकार हिंदी की अनेक फिल्में दक्षिण भारत की भाषाओं में डब करके दिखाई जाती है और दक्षिण भारत की भाषाओं की फिल्में उतर भारत में दिखाई जाती हैं।

डबिंग-अनुवाद के दौरान अनुवाद सिद्धांत के अनुसार ही फिल्मी संवादों का अनुवाद पूर्णतया समरूपी नहीं होता, अपितु इसमें समतुल्यता (Equivalence) के सिद्धांत का निर्वाह किया जाता है। कई बार मूल पाठ का पहले लक्ष्य भाषा में अनुवाद होता है और फिर उसका मुक्त पुनरनुवाद होता है। जैसे एन. टी. रामाराव और मीनाक्षी शेषाद्रि की द्विभाषिक फिल्म 'विश्वामित्र' के संवाद-लेखन के समय पहले संवाद-लेखक को तेलुगू से भाषांतर कर सरल अंग्रेज़ी में संवाद दिए गए, फिर उनके आधार पर संवाद-लेखन किया गया। इस प्रकार डबिंग-अनुवाद में एक से अधिक व्यक्तियों का सहयोग रहता है। यहाँ यह उल्लेख करना असमीचीन न होगा कि डबिंग के लिए संवाद-लेखक को मूल संवाद-लेखक की अपेक्षा बहुत कम मान्यता मिलती है, जबकि स्रोत भाषा के मूल संवाद-लेखक की तुलना में डबिंग के लिए संवाद लिखने वाले को अत्यधिक परिश्रम करना पड़ता है। यही सिद्धांत तेलुगू और तमिल फिल्म 'महाबली' के हिंदी डबिंग-अनुवाद पर लागू होती है। वस्तुत: डबिंग के अनुवाद में एक ऐसी फिल्म को लक्ष्य भाषा के शब्द या अभिव्यक्तियाँ दी जाती हैं, जिसे पहले ही अपनी छवि तथा रूप प्राप्त हो चुके

होते हैं। डबिंग के व्याकरण का यही सूत्र है जिस पर ध्यान देना आवश्यक है। अनूदित संवादों के विश्लेषणात्मक अध्ययन में स्रोत और लक्ष्य भाषाओं के व्यतिरेकों, सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों, भाषापरक विशिष्टताओं, प्रोक्तिपरक संरचनाओं आदि के साथ-साथ भाव-भंगिमाओं पर भी विचार होता है। इस प्रकार अनुवाद एक अनुप्रायोगिक विधा तो है ही, लेकिन डबिंग-अनुवाद तो उसका भी अनुप्रयोग है।

डबिंग की सीमाएँ

डबिंग श्रव्य-दृश्य (AVT) जैसे विशाल विषय का एक अंग माना जाता है, जिसमें अंतरभाषिक अंतरण के अतिरिक्त चित्रों, संगीत और अन्य भाषेतर तत्वों की भी भूमिका रहती है। इस दृष्टि से यह एक प्रकार से बहु-सकेतित अंतरण है। आज फिल्मों और टी. वी. कार्यक्रमों के तीव्र गति से हो रहे अंतरराष्ट्रीयकरण के कारण विश्व के अनेक देशों के दर्शक और श्रोता अनेक भाषाओं तथा संस्कृतियों में श्रव्य-दृश्य उत्पाद देख पा रहे हैं। भाषा-ज्ञान की दीवारों को तोड़ते हुए दर्शक और श्रोता वर्ग में प्रयुक्त डी. वी. डी. से डबिंग की व्यावसायिक मांग में वृद्धि हुई है। इस लिए भाषिक अंतरण और निर्माण-तकनीकों के प्रयोग के अंतर्गत कई बार सामाजिक-सांस्कृतिक तत्त्वों, देश-काल, जीवन-शैली और मूल्य पद्धति की अनदेखी हो जाती है, जिसके कारण फिल्मों और टी. वी. कार्यक्रमों के साथ दर्शकों का तादात्म्य नहीं हो पाता।

यह भी एक धारणा है की विदेशी भाषा और ध्वनियों के साथ स्क्रीन पर अभिनेता के होठों की गति तथा डब की गई आवाज़ कितनी भी अच्छी तरह से संश्लेषित हो, उसमें कोई-न-कोई दोष मिल ही जाता है और यह भ्रम की स्थिति पैदा करता है।

हर भाषा की अपनी अभिव्यक्ति पद्धति होती है। उसका तान-अनुतान, बलाघात, लय-विधान आदि अलग होता है। किसी फिल्म की लक्ष्य भाषा में डबिंग करते हुए उस भाषा की विशिष्टताओं और लक्षणों से यदि कलाकार परिचित नहीं है तो वह नए दर्शक की भाषा से न्याय नहीं कर पाएगा और यह उसकी सीमा है। एक विद्वान मैक ने कहा है कि हालीवुड की कई फिल्मों में कुछ फ्रांसीसी कलाकार निरंतर आवाज़ देते हैं। इनकी आवाज़ को अनेक फ्रांसीसी लोग पहचानते हैं और वे आश्चर्य में पड़ जाते हैं। अत: लक्ष्य भाषा के भाषा-भाषी कलाकार से आवाज़ डब करने से ही न्याय हो पाने की संभावना है। लेकिन लक्ष्य भाषा के डबिंग कलाकार को ढूँढ पाना कठिन है। इसके बिना मूल फिल्म की सटीक प्रतिकृति तैयार करना संभव नहीं है।

कई विदेशी भाषाओं के डबिंग का खर्च बहुत अधिक पड़ता है और वह भी अनेक लक्ष्य भाषाओं की डबिंग का। यह भी सुनिश्चित नहीं कि वह फिल्म कितनी सफल होगी, क्योंकि यह आवश्यक नहीं हर लक्ष्य भाषा के दर्शक को वह फिल्म पसंद आए।

कई बार डबिंग का अनुवाद भी एक सीमा बन कर खड़ा होता है। यदि अनुवाद बुरा होता है या नितांत शब्दानुवाद होता है तो फिल्म का मूल संदेश दर्शकों तक नहीं पहुँच पाता। हर भाषा न केवल उच्चारण, शब्दावली, व्याकरण आदि की दृष्टि से एक-दूसरे से भिन्न होती है, बल्कि संस्कृतियों की दृष्टि से भी भिन्न होती है। इसमें यदि चूक हो जाए तो दर्शक और श्रोता वर्ग उस फिल्म को पसंद नहीं कर

पाएगा।

डबिंग और सबटाइटलिंग में अंतर

डबिंग और सबटाइटलिंग अपनी मूल अवधारणा और प्रकार्य की दृष्टि से एक-दूसरे से भिन्न हैं। डबिंग का प्रकार्य एक ऐसा विकल्प तैयार करना है, जिससे समूचे संवाद का मिलता-जुलता ध्वनि-संकेत निर्मित हो जाए। सबटाइटलिंग संवाद का लिखित पाठ प्रारूप है, जो स्क्रीन के निचले भाग में प्रक्षेपित होता है। डबिंग से स्रोत भाषा की फिल्म अर्थात हिंदी फिल्म के नायक-नायिका और अभिनेताओं को तमिल, बंगला, मराठी अथवा अंग्रेजी, स्पेनिश आदि भाषाएँ बोलते हुए स्क्रीन पर देखेंगे, जबकि सबटाइटलिंग से नायक-नायिका और अभिनेताओं को अपनी मूल भाषा में बोलते हुए देखेंगे, किंतु फिल्म के नीचे उनके या तो उसी मूल भाषा में लिखित रूप देखेंगे या तमिल, कन्नड़, अंग्रेजी आदि अन्य भाषाओं में अनूदित पाठ देखेंगे। इस संबंध में एक विद्वान हेनरिक गाटलिब (1998) का कथन है कि उपशीर्षक खंडित अनुवाद है और डबिंग एकीकृत अनुवाद है।

आजकल यह संभव नहीं है कि किसी एक भाषा में फिल्म बनाई जाए और उसे अन्य भाषी दर्शकों को दिखाया जाए तथा इसके लिए उनकी भाषा में उपशीर्षक दिया जाए। वस्तुत: इससे फिल्म में कई बार बोधगम्यता में कठिनाई होती है, उसकी प्रकृति और नैसर्गिकता में अंतर आता है तथा उस फिल्म के साथ तादात्मय स्थापित नहीं हो पाता, जिससे रसास्वादन में व्यवधान पहुँचता है। इसीलिए ऐसी फिल्म में आवाज़ देना आवश्यक हो गया है, जिससे फिल्म अधिक बोधगम्य और मनोरंजक हो जाती है। इस प्रकार डबिंग की यह प्रक्रिया अन्य भाषी या विदेशी फिल्म का स्थानीकरण करती है जो अन्य भाषी दर्शक के लिए अधिक सुविधाजनक होती है। इसी संदर्भ में सुविख्यात अनुवादशास्त्री जूलियाना हाउस (1977) ने अनुवाद के प्रकारों के बारे में चर्चा करते हुए सबटाइटलिंग को खुला अनुवाद कहा है और डबिंग को बंद अनुवाद कहा है, जिसका उद्देश्य दूसरे स्तर का मूल तैयार करना है।

इस प्रकार डबिंग और सबटाइटलिंग अनुवाद के दो वृहत किंतु भिन्न विधाएँ हैं। इनका उपयोग निर्मित फिल्म अथवा संदेश भाषा को अन्य भाषी दर्शकों के विशाल समुदाय तक अपनी पहुँच प्राप्त करने के लिए होता है। कई फिल्मों या टी. वी. कार्यक्रमों के मामले में लक्ष्य भाषा में उन लोगों के लिए सबटाइटलिंग होता है, जिन्हें सुनने में बाधा पहुँचती है अथवा जो लोग शैक्षिक प्रयोजन के लिए फिल्म या टी. वी. कार्यक्रम देखते है।

एक उल्लेखनीय अंतर यह भी है कि डबिंग और सबटाइटलिंग के निर्माण की प्रक्रिया में डबिंग में जो खर्च होता है वह सबटाइटलिंग की तुलना में कई गुना अधिक होता है। उपशीर्षीकरण की प्रक्रिया डबिंग की अपेक्षा अधिक सरल है तथा इसमें अपेक्षाकृत कम समय भी लगता है।

इस प्रकार डबिंग का प्रयोग वैश्विक तथा भारतीय मीडिया उद्योग में व्यापक स्तर पर हो रहा है। वास्तव में चित्रों की अपनी भाषा होती है, लेकिन वह सार्वभौमिक होती है। इन चित्रों का अर्थ पूरे विश्व में लगभग एक-जैसा निकलता है। कुछ विद्वानों का मत है कि एक हज़ार शब्दों की तुलना में एक चित्र बेहतर होता है। फिल्म, टी. वी. कार्यक्रम, वीडियो आदि गतिमान चित्रों के ऐसे प्रारूप हैं जिनमें चित्र बड़ी तीव्र गति से चलते हैं, किंतु यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यदि दृश्य को श्रव्य के साथ दिखाया जाए

तो चित्रों को वाणी या ज़ुबान मिल जाती है। यहीं से डबिंग और सबटाइटलिंग की यात्रा प्रारंभ होती है। आज के भूमंडलीकरण के युग में जनसंचार ने मनोरंजन के साथ-साथ सूचना और ज्ञान के क्षेत्र में भी द्वार खोल दिए हैं। इस लिए एक फिल्म या टी. वी. कार्यक्रम किसी निश्चित अंचल तक सीमित नहीं रह गया वरन् उसे विश्व के अनेक देशों में प्रसारित करना आवश्यक हो गया है। अत: फिल्मों और टी. वी. कार्यक्रमों को स्थानीय, क्षेत्रीय और विदेशी भाषाओं में डब किया जाता है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि डबिंग का प्रचलन टाकीज़ या बोलती फिल्मों के समय से प्रारंभ हुआ। शुरु-शुरू में डबिंग का प्रयोग फिल्मों के ध्वनि-गुणों को बढ़ाने के लिए होता था। पहले नायक-नायिकाओं अथवा पात्रों को स्वयं गीत गाने होते थे। अगर उनकी आवाज़ सुरीली नहीं होती थी तो ऐसी स्थिति में गीतों को रिकार्ड कर लिया जाता था। बाद में जिन गीतों की रचना अन्य स्रोतों से की जाती थी, उनको मूल गीतों के स्थान पर रखा जाता था। आजकल डबिंग का काफी विस्तार हो गया है और एक भाषा में निर्मित फिल्म या टी. वी. कार्यक्रम का डबिंग कई भाषाओं में होता है। वस्तुत: आज सबटाइटलिंग के अतिरिक्त डबिंग की व्यावसायिक-सेवा भी फिल्म, डी. वी. डी., दूरदर्शन आदि में बहुत बढ़ गई है। यह एक उद्योग के रूप में उभर रहा है। यह एक ऐसा अनिवार्य उपकरण बन गया है, जिसकी माँग न केवल बहुभाषी देशों की स्वदेशी भाषाओं के लिए बढ़ी है, बल्कि विदेशी भाषी लोगों के लिए भी बढ़ी है। विश्व की भाषाओं के लिए डबिंग की मांग के बढने के कारण अनुवाद को भी नई दिशा और नए क्षेत्र प्राप्त हुए हैं। इस अनुवाद का संबंध उस भाषा-भाषी दर्शकों तक होगा, जिसका सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश उसमें निहित होगा। इसीलिए डबिंग के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद में नए चिंतन और अध्ययन होने लगा है, क्योंकि इसके अनुवादकों की माँग में निरंतर वृद्धि हो रही है।

संदर्भ-सूची

1. House, Juliana 1977 Model for Translation Quality. TBL Verlag.
2. Tveit, JE 1998. The Role of Translation in the Film and Television Industries *In* MG Macfarlance (ed.) Proceedings of the 39th Annual Conference of the American Translators Association, Alexandria, VA:ATA; pp.365-69.
3. https/www.britannica.com/technology/dubbing-cinema
4. कृष्ण कुमार गोस्वामी 2008 (2012, 2016) अनुवाद विज्ञान की भूमिका; नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन

लेखक परिचय :

प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी
1764, औट्रम लाइन्स,
डॉ. मुखर्जी नगर (किंग्ज़वे कैंप),
दिल्ली – 110 009
मो: 0-9971553740